विष्णुशर्माकृत-पञ्चतन्त्र एवं अभिराजराजेन्द्रमिश्रकृत अभिनवपञ्चतन्त्र का तुलनात्मक अध्ययन

चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ

की पीएच॰ डी॰ (संस्कृत) उपाधि

हेतु

शोध प्रबन्ध की रूपरेखा

शोध निर्देशिका

डॉ॰ पूनम लखनपाल

एसोसिएट प्रोफेसर, संस्कृत विभाग

रघुनाथ गर्ल्स पी॰जी॰ कॉलेज, मेरठ

शोधार्थिनी

विनीता

शोध केन्द्र

रघुनाथ गर्ल्स पी॰जी॰ कॉलेज, मेरठ

विष्णुशर्मा-कृत पञ्चतन्त्र एवं अभिराजराजेन्द्रमिश्र-कृत अभिनव पञ्चतन्त्र का तुलनात्मक अध्ययन

संस्कृत कथा साहित्य कथारत्नों का आगार है, जिसने मात्र भारतीय साहित्य को ही नहीं भारतेतर साहित्य को भी व्यापक रूप से प्रभावित किया है। वैदिक, सनातन, जैन और बौद्ध प्रायः सभी धार्मिक मार्गों ने न केवल धार्मिक तथ्यों को प्रस्तुत करने के लिए अपितु व्यावहारिक उपदेश देने के लिए कथा–आख्यानों का ही आश्रय लिया है। वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद, पुराण, जैन–कथा कोश, बौद्ध जातक कथाओं की कथा एवं आख्यान **'रामादिवद्वर्तितव्यं न रावणादिवत्'** का सन्देश देकर काव्यशास्त्रीय प्रयोजन तो सिद्ध करते ही हैं सामाजिक एवं नैतिक आदर्श भी स्थापित करते हैं।

उपरोक्त दार्शनिक एवं धार्मिक दृष्टि से पृथक सामाजिक एवं नैतिक दृष्टि से भारतीय साहित्य के दो कथाग्रन्थ विशेष प्रसिद्ध हैं– बृहत्कथा एवं पञ्चतन्त्र, जिन्होंने विश्व पर भारत का विपुल प्रभाव स्थापित किया है।

पञ्चतन्त्र आचार्य विष्णुशर्मा द्वारा रचित ग्रन्थ हैं, जिसके द्वारा उन्होंने महिलारोप्य नामक नगर के राजा अमरकीर्ति के मूर्ख राजकुमार पुत्रों को स्वल्प अवधि में व्यवहार कुशल, सदाचार सम्पन्न तथा नीतिनिपुण बना दिया। पञ्चतन्त्र की रचना का उद्देश्य सदाचार एवं नीतिशिक्षण ही रहा है। रामायण, महाभारत तथा प्राचीन नीतिग्रन्थों तथा कौटिल्य अर्थशास्त्र के उद्धरणों से अलंकृत यह ग्रन्थ पशुपक्षियों की कथाओं के माध्यम से सहजग्राह्य सरल भाषा में, विनोदप्रियता के साथ आज भी बालमन को आकर्षित कर उन्हें सन्मार्ग की दिशा प्रदान करता है। यह

कालजयी रचना पाश्चात्य विद्वानों के मत में भारतीय साहित्य का ही अंग न होकर विश्वसाहित्य का भी उदात्त तथा आदरणीय अंग है।

'अभिनवपञ्चतन्त्र' अभिराजराजेन्द्रमिश्र द्वारा रचित आधुनिक ग्रन्थ है, जिसका उपजीव्य पञ्चतन्त्र ही है। इसे प्राचीन पंचतंत्र का आधुनिक रूपान्तरण अथवा नवीन संस्करण कहा जा सकता है। बालबुद्धि को नैतिक शिक्षा से दिशा निर्देश करना इस ग्रन्थ का भी उद्देश्य है–

अनुदिनं कदलीव विवर्धते

तुहिनविन्दुततीव च शोभते।

परिणतिं समुपेत्य विनश्यति

ननु समूलमियं खलमित्रता।।

(अभि०, मित्रसम्प्राप्ति, श्लोक सं० – ४)

कथा–कहानियों के प्रति बालकों की स्वाभाविक अभिरूचि होती है। इसी कारण विभिन्न कार्टून्स पर आधारित कॉमिक्स बच्चों को बहुत प्रिय हैं। दूरदर्शन पर भी बच्चों को शिक्षा प्रदान करने वाले मनोरंजक धारावाहिक प्रसारित किए जाते है। इन सभी का उद्देश्य बालकों को पशुपक्षियों की कथाओं के माध्यम से खेल खेल में अनायास ही शिक्षा प्रदान करना है। वर्तमान समय में संस्कृत अध्ययन के अभाव में बालमन को वह नैतिक शिक्षा प्राप्त नहीं हो पा रही है, जो उस आयु एवं स्तर पर बालकों के लिए उपयोगी एवं आवश्यक है। इसी कारण प्रतिदिन

उनका नैतिक पतन होता जा रहा है। अतः उन्हें इस प्रकार के साहित्य के अध्यापन की आवश्यकता है। यही विचार करते हुए विष्णु शर्मा प्रणीत पञ्चतन्त्र एवं अभिराजराजेन्द्रमिश्र प्रणीत अभिनवपञ्चतन्त्र को शोधाध्ययन हेतु चुना गया है। इन ग्रन्थद्वय के साम्य और वैषम्य के साथ वैशिष्ट्य का अवलोकन करते हुए विद्यार्थियों के नैतिक विकास की दृष्टि से अभिराजराजेन्द्रमिश्र कृत अभिनवपञ्चतन्त्र की उपादेयता को प्रतिपादित करना शोध का उद्देश्य है। पञ्चतन्त्र का शोध की दृष्टि से अनेकशः आलोडन विलोडन हो चुका है, किन्तु अभिनवपञ्चतन्त्र इस दृष्टि से पूर्णतः अस्पृष्ट है।

साहित्य परिशीलन में जब कभी एक ही कथावस्तु लेकर दो या दो से अधिक ग्रन्थों का प्रणयन होता है तो उनके पारस्परिक कथ्य और शिल्प विधान को साथ में रखकर साम्य वैषम्य परीक्षण करने की परम्परा है। इसका फल यह होता है कि हम दोनों कवियों के द्वारा रचित ग्रन्थों में उनके किए गये कथावस्तुगत विविध परिवर्तनों को अथवा समरसताओं को पहचान सकते हैं।

इससे पूर्व भी शोधक्षेत्र में कई तुलनात्मक अध्ययन हैं किन्तु इन दो पंचतन्त्रों का यह नवीन अध्ययन होगा जो संस्कृत साहित्य के अध्येताओं एवं नैतिक शिक्षण के लिए महत्वपूर्ण, मौलिक, रुचिकर एवं उपयोगी सिद्ध होगा। परिणाम तो गहन अध्ययन एवं परिश्रम द्वारा ही साध्य है, जिसमें विद्वज्जन की धीनिकषा ही प्रमाण होगी।

विष्णुशर्मा-कृत पंचतन्त्र एवं अभिराजराजेन्द्रमिश्र-कृत अभिनवपंचतन्त्र का तुलनात्मक अध्ययन

रूपरेखा

प्रथम अध्याय – कथा, कवि एवं कृति परिचय

(i) कथा का सामान्य परिचय

(क) कथा शब्द की व्युत्पत्ति

(ख) कथा का लक्षण

(ग) कथा के विभिन्न भेद

(घ) कथा का उद्भव एवं विकास

(ii) कवि एवं काव्य परिचय

(क) महाकवि विष्णु शर्मा एवं अभिराजराजेन्द्रमिश्र का परिचय

(ख) पञ्चतन्त्र एवं अभिनवपञ्चतन्त्र का परिचय

द्वितीय अध्याय – पञ्चतन्त्र तथा अभिनवपञ्चतन्त्र की साहित्यिक दृष्टि से तुलना

(क) कथावस्तु की दृष्टि से

(ख) पात्र योजना की दृष्टि से

(ग) कथनोपकथन की दृष्टि से

(घ) भाषा शैली की दृष्टि से

(ङ.) देशकाल की दृष्टि से

(च) उद्देश्य की दृष्टि से

तृतीय अध्याय – पञ्चतन्त्र तथा अभिनवपञ्चतन्त्र की नैतिक दृष्टि से तुलना

(क) लोकनीति की दृष्टि से

(ख) राजनीति की दृष्टि से

(ग) आर्थिक नीति की दृष्टि से

(घ) धार्मिक नीति की दृष्टि से

चतुर्थ अध्याय – पञ्चतन्त्र तथा अभिनवपञ्चतन्त्र की मनोवैज्ञानिक दृष्टि से तुलना

(क) मनोविज्ञान की दृष्टि से

(ख) बाल मनोविज्ञान की दृष्टि से

(ग) पशु मनोविज्ञान की दृष्टि से

पंचम अध्याय – **पञ्चतन्त्र तथा अभिनवपञ्चतन्त्र की सांस्कृतिक दृष्टि से तुलना**

(क) भौगोलिक विवरण की दृष्टि से

(ख) सामाजिक जीवन की दृष्टि से

(ग) शिक्षा, कला एवं मनोरंजन की दृष्टि से

षष्ठ अध्याय – **पञ्चतन्त्र एवं अभिनवपञ्चतन्त्र की कथाओं की शिक्षा की उपादेयता**

उपसंहार –

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. पंचतंत्रम् (छात्रबोधिनी टीका सहित) : विष्णु शर्मा, पं0 जीवराम उपाध्याय, सरस्वती प्रेस मुरादाबाद,1934

2. काव्यादर्श : दण्डी, व्या0 पं0 शिव नारायणशास्त्री परिमल पब्लिकेशन्स दिल्ली 1988

3. साहित्यदर्पण : विश्वनाथ श्री दुर्गाप्रसाद द्विवेदेन पंकज पब्लिकेशन्स, दिल्ली 2004

4. हितोपदेश : विष्णु शर्मा, सं0 एवं अनु0डॉ0 भीमराज शर्मा, हंसा प्रकाशन जयपुर, 2005

5. बीसवीं शताब्दी का संस्कृत लघुकथा साहित्य : रूचि कुलश्रेष्ठ राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, दिल्ली, 2008

6. पंचतंत्र मित्र सम्प्राप्ति : विष्णु शर्मा, सं0 डॉ0 कर्णसिंह, साहित्य भण्डार मेरठ, 2008

7. अभिनव पंचतंत्र : अभिराज राजेन्द्र मिश्र, वैजयन्त प्रकाशन, 2009

8. संस्कृत साहित्य का वृहद इतिहास : डॉ0 पुष्पा दीक्षित, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, 2011